सम्पादकीय

विश्व गुरूदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोध पत्रिका का अष्टम पुष्प आपके कर कमलों में देते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म संस्कृति के शोध लेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। नियमित विद्वानों द्वारा भेजे जा रहे शोध लेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों की सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं व शोध संस्थान द्वारा किये गये कार्यक्रमों के चित्र सहित विवरण प्रकाशित किया गया है।

इस शोध परक पत्रिका में भारतीय पुराविद्या से प्रारंभ होकर वर्तमान तक सब कुछ इस अङ्क में मनीषीयों द्वारा वर्णित कर दिया है।

डॉ. शिवदत्त शर्मा जी ने महात्मा और ईश्वर का सामंजस्य स्थापित किया है। भारतेन्दू हरिशचन्द्र का संस्कृत को योगदान डॉ. कौशल तिवारी का शोध परक अनुसंधान है। पिता का आशीर्वाद और उस आशीर्वाद की परीक्षा का शिक्षाप्रद आलेख अनमोल जी दुबे ने किया है। पुरा इतिहास की अभूतपूर्व जानकारी संस्कृत भाषा के विकास में राजस्थान के ग्रन्थागारों का योगदान डॉ. सोमबाबू शर्मा जी ने दिया है। जीवन की सत्यता को पहचानने में सूत्रात्मक आलेख श्री धीरेन्द्र स्वामी ने बताया है। काव्यत्रयी के प्रथम भाग को डॉ. बलराम शुक्ल ने प्रकाशित किया है। क्षनिका सप्तकम् में हास्यात्मक कविता डॉ. शिवचरण शर्मा जी की रचना है तथा दु:ख में शीर्षक से अलंकृत रचना डॉ. राजकुमार मिश्रा जी की है।

इस अंक में प्रकाशित समस्त लेख प्रबुद्ध विद्वानों का एक संगम है। आशा है सुधीजन इस ज्ञान गंगा का पान पूर्ण मनोयोग के साथ करेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

सम्पादक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा